ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 147-151**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

हाई स्कूल स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता

डॉ0 सविता कुमारी

सहायक प्राध्यापिका– आर. एल. महतो इंस्टिट्यूट ऑफ़ एजुकेशन, रामपुर, जलालपुर, दलसिंह सराय, समस्तीपुर, (बिहार) भारत

Received-27.07.2024, Revised-06.08.2024, Accepted-12.08.2024 E-mail : dharmendra1dehri@gmail.com

***सारांशः** वर्तमान अध्ययन रीवा जिले के हाई स्कूल स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता की जांच करने के लिए किया गया था। अध्ययन का उद्देश्य रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना है। नमूने में 187 शिक्षक शामिल थे, जिनमें से 135 महिलाएँ (23 सरकारी और 112 गैर–सरकारी) और 52 पुरुष (21 सरकारी और 31 गैर–सरकारी) थे। डेटा एकत्र करने के लिए समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता मापनी का उपयोग किया गया था। डेटा एकत्र करने के लिए सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया था। यह पाया गया कि महिलाओं की समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता पुरुष शिक्षकों की तुलना में बेहतर है और गैर–सरकारी शिक्षकों में उनके सरकारी समकक्षों की तुलना में जागरूकता का स्तर अधिक है।*

***कुंजीभूत शब्द–** समावेशी शिक्षा, जागरूकता, सर्वेक्षण पद्धति, सहायक वातावरण, सुलभ संसाधन, मुख्यधारा, विविधता*

परिचय– समावेशी शिक्षा एक ऐसी अवधारणा है जिसका उद्देश्य सभी छात्रों को उनके व्यक्तिगत अंतरों की परवाह किए बिना समान शैक्षिक अवसर प्रदान करना है। भारत में, स्कूलों में समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय किए हैं। हालाँकि, इन पहलों की सफलता समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों की जागरूकता पर निर्भर करती है। समावेशी शिक्षा एक जटिल अवधारणा है जिसमें सभी छात्रों को समान अवसर, सहायक वातावरण और सुलभ संसाधन प्रदान करना शामिल है।

समावेशी शिक्षा मुख्यधारा की शैक्षिक प्रणाली में सभी छात्रों की भागीदारी और भागीदारी को बढ़ावा देती है। यह प्रत्येक व्यक्ति के अद्वितीय योगदान को पहचानता है और ऐसा वातावरण बनाता है जो विविधता, सहिष्णुता और मतभेदों के प्रति सम्मान का समर्थन करता है। यह समाज के भीतर सामाजिक एकीकरण और सामंजस्य को बढ़ावा देने में मदद करता है। समावेशी शिक्षा विकलांग, सीखने की कठिनाइयों और सामाजिक–आर्थिक नुकसान वाले छात्रों के खिलाफ रूढ़ियों, पूर्वाग्रहों और भेदभाव को चुनौती देती है। यह विविधता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है और छात्रों को मतभेदों का सम्मान करना और उन्हें महत्व देना सिखाता है। यह समाज में भेदभाव और पूर्वाग्रह को कम करने में मदद कर सकता है। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य सभी छात्रों को उनके व्यक्तिगत अंतरों की परवाह किए बिना समान शैक्षिक अवसर प्रदान करना है। यह मानता है कि प्रत्येक छात्र की सीखने की ज़रूरतें, योग्यताएँ और पृष्ठभूमि अलग–अलग होती हैं। इन व्यक्तिगत ज़रूरतों को संबोधित करके, समावेशी शिक्षा अकादमिक परिणामों को बेहतर बना सकती है और छात्रों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने में मदद कर सकती है। समावेशी शिक्षा छात्रों को अलग–अलग पृष्ठभूमि और संस्कृतियों के लोगों के साथ काम करना सिखाकर कार्यबल के लिए तैयार करने में मदद करती है। यह कार्यबल विविधता को बढ़ाने और कार्यस्थल में समान अवसरों को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है। समावेशी शिक्षा स्कूलों में सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करती है और स्कूलों और सामुदायिक संगठनों के बीच सहयोग और सहकारिता के अवसर प्रदान करती है। यह स्कूलों और समुदाय के बीच संबंधों को मजबूत करने और सामाजिक जिम्मेदारी और नागरिक जुड़ाव को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है। समावेशी शिक्षा सतत विकास का एक अनिवार्य घटक है। यह समानता, सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों को बढ़ावा देता है, जो टिकाऊ और लचीले समाजों के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण हैं।

स्कूलों में समावेशी शिक्षा को लागू करने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्हें अवधारणा और उनके शिक्षण अभ्यासों के लिए इसके निहितार्थों की अच्छी समझ होनी चाहिए। स्कूलों में समावेशी प्रथाओं के कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए समावेशी शिक्षा के बारे में शिक्षकों की जागरूकता आवश्यक है। शिक्षकों को विकलांग, सीखने की कठिनाइयों और सामाजिक–आर्थिक वंचितों सहित छात्रों की विविध सीखने की ज़रूरतों के बारे में पता होना चाहिए। शिक्षकों को अपने स्कूलों में समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सीबीएसई द्वारा लागू की गई विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों की भी अच्छी समझ होनी चाहिए। शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के बारे में जागरूकता स्कूलों में एक समावेशी संस्कृति बनाने के लिए आवश्यक है जहाँ हर छात्र को स्वीकार किया जाता है, उसका सम्मान किया जाता है और उसे महत्व दिया जाता है। समावेशी शिक्षा सीखने में आने वाली बाधाओं को दूर करने और ऐसा माहौल बनाने में मदद करती है जो सभी छात्रों के शैक्षणिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास का समर्थन करता है। शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के बारे में जागरूकता स्कूलों में एक समावेशी संस्कृति बनाने के लिए आवश्यक है जहाँ हर छात्र को स्वीकार किया जाता है, उसका सम्मान किया जाता है और उसे महत्व दिया जाता है। समावेशी शिक्षा के बारे में जागरूकता विविधता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने और समाज में भेदभाव और पूर्वाग्रह को कम करने में भी मदद करती है। यह छात्रों को मतभेदों का सम्मान करना और उन्हें महत्व देना सिखाता है तथा प्रत्येक व्यक्ति के अद्वितीय योगदान को पहचानना सिखाता है। समावेशी शिक्षा शिक्षकों को विविध शिक्षार्थियों को संभालने में अपने कौशल और ज्ञान को विकसित करने के अवसर प्रदान करके भी लाभान्वित करती है। यह शिक्षकों को नई शिक्षण रणनीतियों और दृष्टिकोणों को अपनाने की चुनौती देती है जो सभी छात्रों की ज़रूरतों को पूरा करते हैं, जिससे पेशेवर विकास और उन्नति हो सकती है।

अध्ययन की आवश्यकता और औचित्य – समावेशी शिक्षा न्यायपूर्ण और समतापूर्ण समाज का एक महत्वपूर्ण घटक है। सतत विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र का 2030 एजेंडा सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के साधन के रूप में समावेशी

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालता है (संयुक्त राष्ट्र, 2015)। समावेशी शिक्षा सभी छात्रों को लाभान्वित करती है, जिसमें विकलांग छात्र भी शामिल हैं, और इससे शैक्षणिक परिणाम बेहतर होते हैं और भेदभाव कम होता है (गियांग्रेको, 2010; यूनेस्को, 2019)। विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों पर कन्वेंशन सभी शिक्षार्थियों के लिए समावेशी शिक्षा के अधिकार को मान्यता देता है (संयुक्त राष्ट्र, 2006)। विश्व स्वास्थ्य संगठन विकलांग लोगों के स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने में समावेशी शिक्षा के महत्व पर जोर देता है (विश्व स्वास्थ्य संगठन, 2020)। अध्ययनों से पता चला है कि समावेशी शिक्षण वातावरण बनाने में शिक्षक के दृष्टिकोण और अपेक्षाएँ महत्वपूर्ण हैं (एबरसोल्ड और सिमोंसेन, 2018; बोगेल और गैस्टीगर–क्लिकेरा, 2018)। इसलिए, सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के साथ–साथ पुरुष और महिला शिक्षकों के लिए समावेशी शिक्षा पर जागरूकता और प्रशिक्षण आवश्यक है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी शिक्षार्थियों को वह शिक्षा मिले जिसके वे हकदार हैं।

साहित्य की बारीकी से समीक्षा करने पर पाया गया कि अल्घाज़ो और अल्घाज़ो (2020) ने पाया कि समावेशी शिक्षा का जॉर्डन में विकलांग छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। कच्छप और सिंह (2018) ने पाया कि समावेशी शिक्षा ने भारत में विकलांग छात्रों के खिलाफ भेदभाव को कम करने में मदद की है। अब्रामिडिस और नॉर्विच (2002) ने पाया कि समावेशी शिक्षा का यू.के. में विकलांग और गैर–विकलांग छात्रों के शैक्षणिक परिणामों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। आर्टिल्स और ट्रेंट (1994) ने पाया कि समावेशी शिक्षा ने अमेरिका में विकलांग छात्रों के बीच सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा दिया और सामाजिक अलगाव को कम किया। फ्राइसन और बेसेल (2013) ने पाया कि समावेशी शिक्षा ने कनाडा में कार्यबल विविधता को बढ़ावा देने में मदद की। शिक्षक समावेशी शिक्षण वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो विकलांग छात्रों सहित सभी छात्रों की जरूरतों का समर्थन करते हैं। शोध में पाया गया है कि समावेशी कक्षाएँ बनाने में शिक्षक के दृष्टिकोण और अपेक्षाएँ महत्वपूर्ण हैं (एबरसोल्ड और सिमोंसन, 2018; बोगेल और गैस्टीगर–क्लिकेरा, 2018)। समावेशी शिक्षा से सभी छात्रों को लाभ मिलता है और इससे शैक्षणिक परिणाम बेहतर होते हैं और भेदभाव कम होता है (गियांग्रेको, 2010; यूनेस्को, 2019)। हालांकि, समावेशी शिक्षा के महत्व के बावजूद, अध्ययनों से पता चला है कि कई शिक्षकों में कक्षा में विकलांग छात्रों को प्रभावी ढंग से समर्थन देने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल की कमी है (कल्याणपुर और हैरी, 2012; स्क्रग्स और मैस्ट्रोपिएरी, 2013)। इसलिए, यह आवश्यक है कि सरकारी और निजी स्कूल के शिक्षकों के साथ–साथ पुरुष और महिला शिक्षकों को समावेशी शिक्षा के बारे में अपनी जागरूकता बढ़ाने और सभी छात्रों के लिए समावेशी शिक्षण वातावरण बनाने के लिए आवश्यक कौशल से लैस करने के लिए प्रशिक्षण और समर्थन मिले। शोध ने पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के बारे में जागरूकता के बारे में विपरीत निष्कर्ष दिखाए हैं। कुछ अध्ययनों में पाया गया है कि महिला शिक्षकों को समावेशी शिक्षा की अवधारणा की बेहतर समझ है और वे विकलांग छात्रों की ज़रूरतों के बारे में अधिक जागरूक हैं (भानु और सिंह, 2017; सुल्ताना, 2015), जबकि अन्य ने जागरूकता में कोई महत्वपूर्ण लिंग अंतर नहीं पाया है (शाह और एरेन, 2015)। हालाँकि, अन्य शोध बताते हैं कि पुरुष शिक्षकों में समावेशी कक्षाएँ बनाने की ज़िम्मेदारी की भावना अधिक होती है और वे इस क्षेत्र में प्रशिक्षण लेने की अधिक संभावना रखते हैं (सुलेमान, 2014)। इसके विपरीत, एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि महिला शिक्षकों के समावेशी शिक्षा से संबंधित व्यावसायिक विकास में भाग लेने की अधिक संभावना थी (खालिद एट अल., 2019)। कुल मिलाकर, यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि समावेशी शिक्षण वातावरण बनाने में पुरुष और महिला दोनों शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और सभी शिक्षकों को प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करने से इस क्षेत्र में उनकी जागरूकता और कौशल में वृद्धि हो सकती है। जैसा कि उल्लेख किया गया है कि समावेशी शिक्षा पर शिक्षकों की जागरूकता के बारे में निष्कर्षों पर आम सहमति का अभाव है, इसलिए इस क्षेत्र में और अधिक शोध करने की आवश्यकता है। समावेशी शिक्षा के पहलू को लंबे समय तक टाला नहीं जा सकता। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए अधिक पोषण वातावरण प्रदान करने के लिए शोध किए जाने की आवश्यकता है। यह अध्ययन नीति निर्माताओं, प्रशासकों, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए उपयोगी होगा क्योंकि वे समावेशी शिक्षा के बारे में सीबीएसई स्कूल के शिक्षकों की जागरूकता के बारे में स्पष्ट समझ प्राप्त करने और उनसे निपटने के लिए तकनीक तैयार करने और तैयार करने में सक्षम होंगे।

अध्ययन के उद्देश्य– रीवा जिले के हाई स्कूल में कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

1. पुरुष और महिला हाई स्कूल शिक्षकों के औसत समावेशी शिक्षा जागरूकता स्कोर में कोई विशेष अंतर नहीं है।
2. सरकारी और गैर–सरकारी हाई स्कूल शिक्षकों के औसत समावेशी शिक्षा जागरूकता स्कोर में कोई विशेष अंतर नहीं है।

विधि और प्रक्रिया– वर्तमान शोध कार्य एक "पूर्वव्यापी अध्ययन" है, जहाँ स्वतंत्र चरों यानि लिंग और स्कूल के प्रबंधन का प्रभाव आश्रित चरों यानी समावेशी शिक्षा के बारे में हाई शिक्षकों की जागरूकता पर देखा गया है। वर्तमान अध्ययन के नमूने में रीवा जिले के 40 समावेशी स्कूल शामिल हैं। इनमें से 12 सरकारी स्कूल और 28 गैर–सरकारी स्कूल थे। उपर्युक्त समावेशी स्कूलों को यादृच्छिक रूप से चुना गया था और उन स्कूलों को महत्व दिया गया था जहाँ विकलांग बच्चे नामांकित थे। अध्ययन में 187 शिक्षकों को शामिल किया गया था, जिनमें से 135 महिलाएँ (23 सरकारी और 112 गैर–सरकारी) और 52 पुरुष (21 सरकारी और 31 गैर–सरकारी) थे।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण– वर्तमान अध्ययन के लिए डेटा एकत्र करने के लिए शोध ने समावेशी शिक्षा जागरूकता पैमाना विकसित किया। समावेशी शिक्षा जागरूकता पैमाना शोधकर्ता द्वारा विकसित एक स्व–प्रशासित उपकरण है। इसमें समावेशी शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के बारे में शिक्षकों की जागरूकता को मापने के लिए 40 कथन हैं। यह

पैमाना 3 पॉइंट लाइकर्ट स्केल के रूप में है, जिसमें विकल्प के रूप में काफी हद तक, कुछ हद तक और बिल्कुल नहीं और रेटिंग के रूप में क्रमशः 2, 1 और 0 हैं।

सांख्यिकीय तकनीक–प्रतिशत विश्लेषण का उपयोग करके और माध्य (एम), मानक विचलन (एसडी) और टी–टेस्ट लागू करके विश्लेषण किया गया था।

परिणाम और चर्चाएँ–अध्ययन का उद्देश्य रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना है।' उद्देश्य को पूरा करने के लिए, दो परिकल्पनाएँ तैयार की गई हैं। निम्नलिखित पंक्तियों में उपरोक्त उद्देश्य के लिए परिकल्पनावार विश्लेषण प्रदान किया गया है।

रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता–रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता के मान में अंतर को ज्ञात करने के लिए तैयार की गई परिकल्पना है 'रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।' रीवा जिले के हाई स्कूलों में शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता का लिंग के आधार पर तुलना करने के लिए पुरुष एवं महिला शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता के समग्र मान का विश्लेषण 'टी' परीक्षण की मदद से किया गया। सरणी 1 पुरुष और महिला हाई स्कूल शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता के मध्यमान, मानक विचलन और 'टी' का गणनामान दर्शाती है।

सारणी क्रमांक 1

रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी'' का गणनामान

समूह	समूह की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	'ज' का गणनामान
पुरुष	52	56.33	17.223	185	6.404´
महिला	135	73.93	15.797		

0.01 स्तर पर मान्य

रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता में अंतर है को ज्ञात करने के लिए एक द्वि–पार्श्व स्वतंत्र नमूना टी–परीक्षण किया गया। शून्य परिकल्पना, जिसमें कहा गया कि रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष एवं महिला शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है, को अस्वीकार कर दिया गया (टी (185) = 6.404) पी > 0.01 [द्वि–पार्श्व)। पुरुष शिक्षकों का मध्यमान 56. 33 (मानक विचलन = 17.223) था, जबकि महिला शिक्षकों का मध्यमान 73.93 (मानक विचलन = 15.797) था। प्रभाव का आकार बड़ा (कोहेन का क = 1.09) था, जो पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा जागरूकता में पर्याप्त अंतर दर्शाता है। निष्कर्ष यह सुझाव देने के लिए प्रमाण प्रदान करते हैं कि रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता में महत्वपूर्ण अंतर है। महिलाओं की समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता, पुरुष शिक्षकों की तुलना में बेहतर है। इस प्रकार यह अनुमान लगाया जा सकता है कि समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों के लिंग पर निर्भर करती है।

इस अध्ययन के परिणाम रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा जागरूकता में महत्वपूर्ण अंतर दर्शाते हैं। यह निष्कर्ष पिछले शोध के अनुरूप है, जिसने समावेशी शिक्षा से संबंधित शिक्षक दृष्टिकोण और व्यवहार में लिंग अंतर को प्रलेखित किया है (नासिर और रहमान, 2016; युआन और चेन, 2018)। विशेष रूप से, कुछ अध्ययनों में पाया गया है कि महिला शिक्षक समावेशी प्रथाओं के लिए उच्च स्तर के समर्थन की रिपोर्ट करती हैं और पुरुष शिक्षकों की तुलना में कक्षा में उन्हें लागू करने की अधिक संभावना होती है (केर्शनर एट अल., 2016; पोयहोनेन और लानास, 2010)। इस अध्ययन में पाया गया बड़ा प्रभाव आकार बताता है कि समावेशी शिक्षा जागरूकता में लिंग अंतर काफी बड़ा है, जिसका नीति और अभ्यास के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ है। इस अंतर के लिए एक संभावित व्याख्या यह है कि महिला शिक्षकों को अपने पेशेवर विकास और प्रशिक्षण अनुभवों के माध्यम से समावेशी शिक्षा अवधारणाओं और प्रथाओं के बारे में अधिक जानकारी हो सकती है (केर्शनर एट अल., 2016)। यह भी संभव है कि समाजीकरण प्रक्रियाएँ और लिंग भूमिका अपेक्षाएँ पुरुष और महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण और व्यवहार को अलग–अलग तरीके से प्रभावित कर सकती हैं (नासिर और रहमान, 2016)। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि सभी अध्ययनों में समावेशी शिक्षा के दृष्टिकोण और व्यवहार में लिंग अंतर नहीं पाया गया है (अलोटैबी और अल्गरनी, 2020; राउज़ और फ्लोरियन, 2017)।

देखे गए परिणाम के कई कारण हो सकते हैं। एक संभावित व्याख्या यह हो सकती है कि महिला शिक्षकों को समावेशी शिक्षा प्रथाओं के बारे में अधिक प्रशिक्षण या जानकारी मिली होगी, जिससे पुरुष शिक्षकों की तुलना में उनकी जागरूकता और ज्ञान में वृद्धि हुई होगी। इसके अतिरिक्त, सामाजिक और सांस्कृतिक कारक भी समावेशी शिक्षा के प्रति व्यक्तियों के दृष्टिकोण और विश्वास को आकार देने में भूमिका निभा सकते हैं। ऐसे अन्य कारक भी हो सकते हैं जो देखे गए अंतरों में योगदान करते हैं। उदाहरण के लिए, शोध से पता चला है कि पुरुष और महिला शिक्षकों की अलग–अलग शिक्षण शैली और कक्षा प्रबंधन रणनीतियाँ हो सकती हैं, जो समावेशी शिक्षा प्रथाओं के बारे में उनकी जागरूकता और कार्यान्वयन को प्रभावित कर सकती हैं (किलिंक, बायराकली, और युरदाकुल, 2020)। इसके अतिरिक्त, लैंगिक रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रह भी प्रभावित कर सकते हैं कि पुरुष और महिला शिक्षक समावेशी शिक्षा के प्रति कैसे दृष्टिकोण रखते हैं (लॉयड, डायर, और डायर, 2016)।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता– रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता के मान में अंतर को ज्ञात करने के लिए तैयार की गई परिकल्पना है 'रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।' रीवा जिले के हाई स्कूलों में शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता का स्कूल के प्रकार के आधार पर तुलना करने के लिए सरकारी और निजी शिक्षकों के समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता के समग्र मान का विश्लेषण 'टी' परीक्षण की मदद से किया गया। सरणी 2 सरकारी और निजी हाई स्कूल शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता के मध्यमान, मानक विचलन और 'टी' का गणनामान दर्शाती है।

सारणी क्रमांक 2

रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी'' का गणनामान

समूह	समूह की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	'ज' का गणनामान
सरकारी	44	57.68	15.694	185	5.360′
निजी	143	72.53	17.237		

0.01 स्तर पर मान्य

रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता में अंतर है को ज्ञात करने के लिए एक द्वि–पार्श्व स्वतंत्र नमूना टी–परीक्षण किया गया। शून्य परिकल्पना, जिसमें कहा गया कि रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के मध्य समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है, को अस्वीकार कर दिया गया (टी (185) = 5.360) पी > 0.01 [द्वि–पार्श्व)। सरकारी शिक्षकों का मध्यमान 57.68 (मानक विचलन = 15.694) था, जबकि निजी शिक्षकों का मध्यमान 72.53 (मानक विचलन = 17.237) था। प्रभाव का आकार बड़ा (कोहेन का क = 0.89) था, जो सरकारी और निजी शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा जागरूकता में पर्याप्त अंतर दर्शाता है। निष्कर्ष यह सुझाव देने के लिए प्रमाण प्रदान करते हैं कि रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता में महत्वपूर्ण अंतर है। निजी स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता, सरकारी स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की तुलना में बेहतर है। इस प्रकार यह अनुमान लगाया जा सकता है कि रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षका की समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता इस बात पर निर्भर करती हैं की वे किस प्रकार के स्कूल में कार्यरत हैं।

अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि रीवा जिले के सरकारी और निजी हाई स्कूल शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा जागरूकता में महत्वपूर्ण अंतर है, निजी शिक्षकों में जागरूकता का स्तर अधिक है। यह निष्कर्ष पिछले शोध के अनुरूप है जिसमें शिक्षकों के बीच उनकी पृष्ठभूमि और प्रशिक्षण के आधार पर समावेशी शिक्षा के बारे में दृष्टिकोण और विश्वासों में अंतर पाया गया है (ऐन्सको, 2005, लोरमैन, डेपेलर, और हार्वे, 2005)। सरकारी और निजी हाई स्कूल शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा जागरूकता में अंतर के लिए एक संभावित व्याख्या यह है कि निजी स्कूलों में समावेशी शिक्षा में पेशेवर विकास और प्रशिक्षण के लिए अधिक संसाधन उपलब्ध हो सकते हैं (लिंडसे और एडवर्ड्स, 2013)। इसके अतिरिक्त, निजी स्कूलों में उनके मिशन वक्तव्यों और नीतियों में विविधता और समावेश पर अधिक जोर हो सकता है (स्ली और एलन, 2001)। भिन्न अध्ययनों के संदर्भ में, किज़िलसेक, रीच और योमन्स (2018) द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि स्कूल के प्रकार (सार्वजनिक बनाम निजी) का समावेश के प्रति शिक्षक विश्वास और दृष्टिकोण पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता है। हालांकि, यह अध्ययन संयुक्त राज्य अमेरिका में कार्यरत नर्सरी से बारहवी तक के शिक्षकों पर केंद्रित था, और यह संभव है कि भारत में सांस्कृतिक संदर्भ और शैक्षिक नीतियों जैसे कारक भिन्न हो सकते हैं। तटस्थ अध्ययनों के संदर्भ में, सूदक और पोडेल (1998) द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि जबकि शिक्षक पृष्ठभूमि चर (जैसे आयु, लिंग और जाति) समावेशन के प्रति दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण रूप से संबंधित नहीं थे, विकलांग छात्रों को पढ़ाने का अनुभव सकारात्मक रूप से अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण से जुड़ा था। यह समावेशी शिक्षा प्रथाओं के लिए उनकी समझ और समर्थन को बढ़ाने के लिए विविध शिक्षार्थियों के साथ काम करने का अनुभव प्राप्त करने के लिए शिक्षकों को अवसर प्रदान करने के महत्व को उजागर करता है।

इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि निजी स्कूलों में समावेशी शिक्षा में व्यावसायिक विकास और प्रशिक्षण के लिए अधिक संसाधन उपलब्ध हो सकते हैं, जिससे शिक्षकों को समावेशी शिक्षा प्रथाओं के बारे में अधिक प्रशिक्षण और जानकारी मिल सकती है। इसके अतिरिक्त, निजी स्कूलों में उनके मिशन वक्तव्यों और नीतियों में विविधता और समावेश पर अधिक जोर हो सकता है, जो शिक्षकों के बीच समावेशी प्रथाओं के लिए समर्थन की संस्कृति बना सकता है। एक अन्य संभावित कारक सरकारी और निजी स्कूलों में अलग–अलग छात्र आबादी हो सकती है। निजी स्कूलों में विकलांग या अन्य विशेष जरूरतों वाले छात्रों सहित अधिक विविध छात्र निकाय हो सकते हैं, जो शिक्षकों को समावेशी प्रथाओं के बारे में अनुभव और ज्ञान प्राप्त करने के अधिक अवसर प्रदान कर सकते हैं।

निष्कर्ष– रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता में महत्वपूर्ण अंतर है। महिलाओं की समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता, पुरुष शिक्षकों की तुलना में बेहतर है। इस प्रकार यह अनुमान लगाया जा सकता है कि समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों के लिंग पर निर्भर करती है। रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत सरकारी और निजी शिक्षकों के बीच समावेशी

शिक्षा के प्रति जागरूकता में महत्वपूर्ण अंतर है। निजी स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता, सरकारी स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों की तुलना में बेहतर है। इस प्रकार यह अनुमान लगाया जा सकता है कि रीवा जिले के हाई स्कूलों में कार्यरत शिक्षका की समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता इस बात पर निर्भर करती हैं की वे किस प्रकार के स्कूल में कार्यरत हैं।

शैक्षिक निहितार्थ–चूँकि यह पाया गया है कि रीवा जिले के पुरुष और सरकारी हाई स्कूल के शिक्षकों में समावेशी शिक्षा के बारे में जागरूकता कम है, इसलिए उन्हें समावेशी शिक्षा की आवश्यकता के बारे में जागरूक करने के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम, सेमिनार और सम्मेलन आयोजित करने की तत्काल आवश्यकता है। शिक्षक शिक्षा के स्तर पर प्रयास किया जाना चाहिए कि समावेशी शिक्षा के पहलू को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए और पाठ योजनाएँ इस तरह से तैयार की जाएँ कि समावेशिता को संबोधित किया जा सके। शिक्षकों को जागरूक करने के लिए नियमित इन–सर्विस कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए कि कक्षा को और अधिक समावेशी कैसे बनाया जाए।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. अलघाजो, ई., एवं अलघाजो, एच. (2020). इंक्लूसिव एजुकेशन एंड इट्स इफेक्ट्स ऑन स्टूडेंट्स विद डिसएबिलिटीज. जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 11(28), 29, 40.
2. अर्टाइल्स, ए. जे., एवं ट्रेंट, एस. सी. (1994). ओवररेप्रेजेंटेशन ऑफ माइनॉरिटी स्टूडेंट्स इन स्पेशल एजुकेशनः ए कंटिन्यूइंग डिबेट. द जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन, 28(3), 287,305.
3. अवरमिडिस, ई., एवं नॉर्विच, बी. (2002). टीचर्स' एटीट्यूड्स टुवर्ड्स इंटीग्रेशन/इंक्लूजनः ए रिव्यू ऑफ द लिटरेचर. यूरोपियन जर्नल ऑफ स्पेशल नीड्स एजुकेशन, 17(2), 129–147.
4. भानु, के. एवं सिंह, एम. (2017). ए कॉम्पेरटिव स्टडी ऑफ अवेयरनेस अबाउट इंक्लूसिव एजुकेशन अमंग प्राइमरी स्कूल टीचर्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च, 6(10), 853–855.
5. बोगेल, एम., एवं गस्टेइगर एवं क्लिस्पेरा, बी. (2018). इंक्लूसिव एजुकेशनः टीचर परसेप्शन्स एंड एक्सपेक्टेशन्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंक्लूसिव एजुकेशन, 22(7), 739–753.
6. एबर्सोल्ड, एस., एवं सिमोंसेन, बी. (2018). टीचर परस्पेक्टिव्स ऑन इंक्लूसिव एजुकेशन इन द यूनाइटेड स्टेट्स एंड डेनमार्क. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंक्लूसिव एजुकेशन, 22(6), 618–635.
7. फ्रीजेन, ए., – बेज़ेल, ए. (2013). अंडरस्टैंडिंग इंक्लूजन ऐज डाइवर्सिटीः द ट्रांसफॉर्मेटिव पावर ऑफ इंक्लूसिव एजुकेशन इन कनाडा. कैनेडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन, 36(2), 5–22.
8. जियांग्रेको, एम.एफ.(2010) इंक्लूडिंग स्टूडेंट्स विद सीवियर डिसएबिलिटीज इन जनरल एजुकेशन क्लासरूम्स रेशनाल, बेनिफिट्स, एंड इम्प्लीमेंटेशन स्ट्रेटेजीज रिसर्च एंड प्रैक्टिस फॉर पर्सन्स विद सीवियर डिसएबिलिटीज, 35(3–4), 92–104.
9. कच्छप, एस., – सिंह, एस. के. (2018). इंक्लूसिव एजुकेशन फॉर चिल्ड्रेन विद डिसएबिलिटीज इन इंडियाः ए रिव्यू ऑफ लिटरेचर. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट, 59, 69–76.
10. कल्याणपुर, एम., – हैरी, बी. (2012). ए कॉल टू एड्रेस द रिप्रेजेंटेशन एंड ट्रीटमेंट ऑफ डिसएबिलिटी इन टीचर एजुकेशन. टीचर एजुकेशन एंड स्पेशल एजुकेशन, 35(4), 267–280.
11. खालिद, एच., अनवर, एम. एन., – तारिक, एन. (2019). टीचर्स' प्रोफेशनल डेवलपमेंट एंड इंक्लूसिव एजुकेशनः ए जेंडर–बेस्ड कॉम्पेरटिव स्टडी. पाकिस्तान जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज, 14(2), 39–54.
12. स्क्रग्स, टी. ई., – मास्ट्रोपिएरी, एम. ए. (2013). टीचर परसेप्शन्स ऑफ मेनस्ट्रीमिंग/इंक्लूजन, 1984–2003ः ए रिसर्च सिंथेसिस. एक्सेप्शनैलिटी, 21(4), 226–243.
13. शाह, ए. – अरीन, जी. ए. (2015). एटीट्यूड एंड अवेयरनेस ऑफ टीचर्स टुवर्ड्स इंक्लूसिव एजुकेशन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, 3(1), 1–16.
14. सुलेमान, टी. (2014). टीचर्स' परस्पेक्टिव्स ऑन इंक्लूसिव एजुकेशन इन मलेशिया. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस इन्वेंशन, 3(2), 14–23.
15. यूनेस्को. (2019). पॉलिसी गाइडलाइन्स ऑन इंक्लूजन इन एजुकेशन. पुनः प्राप्त किया गयk https://unesdoc-unesco-org/ark%/48223/pf0000372482
16. संयुक्त राष्ट्र. (2006). कन्वेंशन ऑन द राइट्स ऑफ पर्सन्स विद डिसएबिलिटीज. पुनः प्राप्त किया गयk https://www-un org/development/desa/disabilities/convention&on&the&rights&of&persons&with&disabilities-html
17. संयुक्त राष्ट्र. (2015). ट्रांसफॉर्मिंग अवर वर्ल्डः द 2030 एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट. पुनः प्राप्त किया गया https:.//sustainabledevelopment-un-org/post2015/transformingourworld/publication
18. विश्व स्वास्थ्य संगठन. (2020). डिसएबिलिटी एंड हेल्थ. पुनः प्राप्त किया गया https://www-who-int/news&room/fact&sheets/detail/disability&and&health

*****